IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फर्रूखाबाद घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों का संगीत के क्षेत्र में योगदान

डॉ0 शुभम वर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत विभाग
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर
पता– के–16 रतन आर्बिट, इन्दिरा नगर
कानपुर नगर–208026

सारांश

फर्रूखाबाद घराने के प्रतिष्ठित कलाकार जिन्होंने संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की निम्नवत है–उस्ताद मुनीर खाँ, उस्ताद मसीत खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर हुसैन, पं0 निखिल घोष आदि। उस्ताद मुनीर खाँ जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद के ललियाना नामक गाँव में सन् 1863 में पारम्परिक संगीतज्ञों के परिवार में हुआ। उस्ताद मसीत खाँ जी का जन्म सन् 1890 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुआ। उस्ताद अहमद जान खाँ का जन्म सन् 1891 में मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) के ख्याति प्राप्त संगीतज्ञ परिवार में हुआ। उस्ताद अमीर हुसैन खाँ जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के बनखड़ा नामक गाँव में सन् 1899 में हुआ। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के तबला वादक पद्मभूषण पं० निखिल घोष का जन्म 28 दिसम्बर, 2018 को वारिसाल नामक गाँव में (वर्तमान बांग्लादेश में स्थिति) एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ।

मुख्य शब्द–संगीत, घराना, गत, टुकड़ा, चक्करदार, रेला आदि।

उस्ताद मुनीर खाँ

उस्ताद मुनीर खाँ जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद के ललियाना नामक गाँव में सन् 1863 में पारम्परिक संगीतज्ञों के परिवार में हुआ। इनके पिता काले खाँ अधिकतर मुम्बई में निवास करते थे। उस्ताद मुनीर खाँ जी के उस्तादों की सूची में चौबीस गुणियों के नाम शामिल हैं। इन्होंने फर्रूखाबाद घराने के उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ के पुत्र उस्ताद हुसैन अली जी से पन्द्रह सालों तक शिक्षा प्राप्त की। उसके पश्चात दिल्ली घराने के उस्ताद नत्थू खाँ जी के पिता खलीफा बोली बख्श से गंडा बंधाकर करीब दस से बाहर वर्षों तक शिक्षा ग्रहण की। इस कारणवश मुनीर खाँ जी और नत्थू खाँ जी गुरू भाई भी हो गए। उस्ताद नजर अली खाँ और नासिर खाँ पखावजी से पारम्परिक रिवाज़ के अनुसार गंडा बंधवाकर तालीम प्राप्त की। मुनीर खाँ साहब जी ने देश का काफी भ्रमण किया। जहाँ से जो अच्छी शिक्षा मिली, वह निःसंकोच उसे ग्रहण करते रहे।

खाँ साहब ने अपना पूरा जीवन मुम्बई और हैदराबाद में व्यतीत किया परन्तु अपने अन्तिम समय में तत्कालीन महान संरक्षक रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह के यहाँ सभासद बन गए। इनके मात्र एक पुत्र हुआ जिसका नाम हिदायत खाँ था, जो किशोरावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ।

खाँ साहब एक उम्दा प्रदर्शक के साथ–साथ एक ऐतिहासिक गुरू के रूप में अमर हो गए। इनके बहुत से शिष्य हुए उसमें से कुछ प्रसिद्ध कलाकारों के नाम निम्नवत हैं–

सर्वश्री उस्ताद अमीर हुसैन खाँ (भांजा)

गुलाम हुसैन खाँ (भतीजा)

हबीबुद्दीन खाँ, अहमद जान थिरकवा, प्रहलाद मेहेर, शमसुद्दीन खाँ, नजीर खाँ पानीपत वाले, मुश्ताक हुसैन बाबा लाल इस्लामपुरकर, डॉ0 फैजजंग बहादुर (हैदराबाद) निसार हुसैन खाँ, अयूब मियाँ, अब्दुल रहीम मियाँ (बरहानपुर), औलाद हुसैन (खैरागढ़), सुब्बाराव माम (गोवा), विष्णु जी शिरोड़कर आदि।

एक प्रसिद्ध रचनाकार एवं उदारवादी शिक्षक उस्ताद मुनीर खाँ साहब ने महाराष्ट्र प्रदेश में तबले का खूब प्रचार–प्रसार किया। आपका स्वर्गवास 11 सितम्बर 1938 को रायगढ़ में हुआ।

11 सितम्बर, 1938 को उस्ताद मुनीर खाँ साहब ने अपनी अन्तिम सांसे रायगढ़ में लीं।

उस्ताद मुनीर खाँ साहब की विभिन्न प्रकार की बंदिशे कुछ निम्नवत है–

चक्करदार : उ. मुनीर खाँ (आड़ा चार ताल)

x	क्डधिंन्ना		किटकतेत्ऽऽऽ	2	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट
0	धाऽऽऽ		ऽऽऽधिरधिर	3	किटतकतकिट		धाऽऽऽ
0	धिरधिरकिटतक		धिरधिरकतऽऽऽ	4	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट
0	धाऽऽऽ		ऽऽऽऽधिरधिर	x	किटतकतकिट		धाऽऽऽ
2	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट	0	धाऽऽऽ		
	क्डधिंन्ना	3	किटकतेत्ऽऽऽ		ऽऽऽऽधिरधिर	0	किटतकतकिट
	धाऽऽऽ	4	ऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट	0	धाऽऽऽ
	धिरधिरकिटतक	x	धिरधिरकतऽऽऽ		ऽऽऽऽधिरधिर	2	किटतकतकिट
	धाऽऽऽ	0	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट	3	धाऽऽऽ
	ऽऽऽऽधिरधिर	0	किटतकतकिट		धाऽऽऽ		
4	क्डधिंन्ना		किटकतेत्ऽऽऽ	0	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट
x	धाऽऽऽ		ऽऽऽधिरधिर	2	किटतकतकिट		धाऽऽऽ
0	धिरधिरकिटतक		धिरधिरकतऽऽऽ	3	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट
0	धाऽऽऽ		ऽऽऽऽधिरधिर	4	किटतकतकिट		धाऽऽऽ
0	ऽऽऽऽधिरधिर		किटतकतकिट[1]				

गत टुकडा : उ. मुनीर खाँ(तीनताल)

x	धिंऽन्नाऽकिटतक	तिरकिटतकताऽ	कऽत्तधा	तिटकतगदिगन
2	धाऽदींऽ	घिडनगतिरकिट	तकताऽघिंऽऽऽ	तराऽन्
0	धाऽऽऽ	ऽऽतेत्ऽ	ऽऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिट

3	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिट	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतकिट[2]

उस्ताद मसीत खाँ

उस्ताद मसीत खाँ जी का जन्म सन् 1890 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुआ। खाँ साहब को तबला वादन की कला अपने परिवार से विरासत में मिली है। उस्ताद मसीत खाँ की तालीम इनके वालिद साहब उस्ताद नन्हें खाँ और इनके दादा हुसैन अली साहब से हुयी। मसीत खाँ साहब हाजी विलायत अली खाँ के पौत्र थे।

खाँ साहब के पिता नन्हें खाँ जी लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में कलाविद थे। उस्ताद मसीत खाँ ने फर्रुखाबाद घराने को आगे बढ़ाने में अपना अग्रणी, विस्मरणीय योगदान दिया। यह कला–पारखी नवाब रामपुर (उत्तर प्रदेश) के संरक्षण में थे परन्तु इन्होंने बंगाल में तबले का बहुत प्रचार व प्रसार किया। इनके पुत्र एवं ख्याति प्राप्त कलाकार स्वर्गीय उस्ताद करामतउल्ला खाँ जी ने तबला वादन में अपनी जगह बना ली थी और इनके पौत्र श्री साबिर खाँ अपने घराने के उत्तराधिकारी हैं। उस्ताद मसीत खाँ जी के बहुत से शिष्य हुये उनमें से कुछ प्रसिद्ध शिष्यों के नाम निम्न हैं–

पदम् भूषण पं0 ज्ञान प्रकाश घोष, अजीम खाँ, मतीन्द्र मोहन बनर्जी उर्फ मण्टू बाबू, केदारनाथ हल्दार, हेमेन्द्र नाथ सरकार, राई चांद बड़ाल, हरेन्द्र किशोर राय चौधरी आदि।

उस्ताद मसीत खाँ का देहावसान 22 अगस्त सन् 1975 को कोलकाता में हो गया।

उस्ताद मसीत खाँ साहब की प्राप्त बंदिशे विभिन्न कलाकारों द्वारा निम्नवत् है–

उ0 मसीत खाँ साहब का टुकड़ा पं0 नयन घोष द्वारा प्राप्त

x	तंग्रधाऽ	दींग्रधाऽ	दीदीकिटतक	दींग्रधाऽ
2	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तंग्रधातं	ग्रंधातंग्र
0	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तंग्रधातं	ग्रंधातंग्र
3	धिरधिरकिटतक	धातिरकिटतक	तंग्रधातं	ग्रधातंग्र[3]

मुखड़ा उ0 मसीत खाँ साहब का तीन ताल में

x	धा	धिं	धिं	धा
2	धा	धिं	धिं	धा
0	तंग्रधाऽ	दींग्रधाऽ	दीदीकिटतक	दींग्रधाऽ
3	किटतकतंग्र	तंग्रतंग्र	तंग्रधादीं	ग्रधातंग्र

Do Muhi Gat in Teen Tal

x	Dha Ghere Na S	Taki Ta Taki Na	Na Gi Na Ta Ki Ta	Tir Kit Tak
2	Dha Gat Ta Kit	Dha Trak Dha Tit	Tak Dha Lan	Dhir Kit Tak
0	Dhir Kit Tak	Tak Dha Lan	Dha Trak Dha Ti Ta	Dha Gat Ta Kit Ta
3	Tir Kit Tak	Na Gi Na Ta Ki Ta	Ta Ki Ta Ta Ki Ta	Dha S Gher Nag[4]

उस्ताद मसीत खाँ साहब का एक कायदा प्राप्त हुआ पं0 देवाशीष अधिकारी शिष्य उस्ताद साबिर खाँ

x	धाऽऽघे	नकधिन	धागेतिरकिट	धिनागिना |
2	घेनकधा	तेटेघेना	धागेतिरिकिट	तिनाकिना |
0	तिरकिटतकतिर	किटतकतिट	घेनाऽतिर	किटतकघेना |
3	घेनाऽऽ	घेनाऽऽ	धागेतिरकिट	तिनाकिना |
x	ताऽऽके	नकतिन	तागेतिरकिट	तिनाकिना |
2	केनकता	तेटेकेना	तागेतिरकिट	तिनाकिना |
0	तिरकिटतकतिर	किटतकतिट	घेनाऽतिर	किटतकघेना |
3	घेनाऽऽ	घेनाऽऽ	धागेतिरकिट	धिनागिना[5] |

उस्ताद अहमद जान थिरकवा

उस्ताद अहमद जान खाँ का जन्म सन् 1891 में मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) के ख्याति प्राप्त संगीतज्ञ परिवार में हुआ। खाँ साहब अपने उस्ताद थिरकवा के उपनाम से ज्यादा विख्यात हुये। इनके पिता हुसैन बख्श खाँ, चाचा शेर खाँ, नाना कलन्दर बख्श खाँ मामा फैयाज खाँ व बसवा खाँ प्रसिद्ध एवं गुणी कलाकार थे। खाँ साहब ने परिवार के इन सभी सदस्यों से शिक्षा ग्रहण की, तदोपरान्त मुम्बई में उस्ताद मुनीर खाँ जी को इन्होंने अपना गुरू बनाया तथा कई वर्षों तक उनके संरक्षण में रहे।

कहा जाता है कि तबले पर थिरकती उंगलियों की वजह से ही इन्हें थिरकवा कहा जाने लगा और संगीत जगत में ये थिरकवा के नाम से ही प्रसिद्ध हुये। इन्होंने बाल गन्धर्व की महाराष्ट्र नाटक कम्पनी में तबला बजाकर खूब लोकप्रियता हासिल की। उस्ताद अहमद जान खाँ जी को उत्तर प्रदेश के रामपुर के राजा का संरक्षण भी प्राप्त था। यहीं से ये भातखंडे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय, लखनऊ में प्रोफेसर के पद पर आसीन हुये तथा जीवन पर्यन्त लखनऊ में ही रहे। उस्ताद अहमद जान साहब को बहुत मान सम्मान एवं उपाधियाँ मिली। सन् 1953–54 में इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार और सन् 1970 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से नवाजा गया।

उस्ताद अहमद जान साहब जी चारो पट के तबलिये थे। ये दिल्ली और फर्रुखाबाद घरानों की वादन शैली के बारीक जानकार थे। परन्तु थिरकवा साहब अपने स्वतन्त्र वादन के लिये प्रसिद्ध हुये। खाँ साहब की पढ़न्त वास्तव में विशेष आकर्षण पूर्ण थी। बचपन से ही ये कला में इतने मग्न रहे कि अपना नाम तक लिखना नहीं सीख पाये। उस्ताद के तीन पुत्र नवीजान, मुहम्मद जान और अली जान हुये। अन्य वादकों की भाँति ही इनके बहुत से शिष्य हुये जो पूरे देश में है, उनमें से कुछ शिष्यों के नाम इस प्रकार है–

सर्वश्री लालजी गोखले (पूणे), स्व0 पद्मभूषण निखिल घोष (मुम्बई), स्व0 प्रेम वल्लभ (दिल्ली), मोहन लाल जोशी, सूर्यकान्त गोखले, नारायण राव, एम0बी0 भिण्डे, अहमद मियाँ, प्रो0 सुधीर वर्मा, रामकुमार शर्मा, सरवत हुसैन आदि।

खाँ साहब ने बहुत से संगीत सम्मेलनों में भाग लिया तथा आकाशवाणी में कई बार प्रसारण भी किया।

उस्ताद जी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मुम्बई चले गये परन्तु उनका अपनी जन्मभूमि, कर्मभूमि लखनऊ से स्नेह कम न हुआ। उनकी अन्तिम इच्छा भी यही थी वो अक्सर कहते थे कि जब तक जिंदा रहूँ, तबला बजाता रहूँ और अन्तिम सांसे लखनऊ में ही लूँ। ईश्वर की कृपा से उनकी यह इच्छा भी पूरी हुयी। वे लखनऊ मुहर्रम करने आये और पुनः मुम्बई जाने की तैयारी की अपने शिष्यों को आशीर्वाद दिया और उसी क्षण दिनांक 13 जनवरी 1976 को इस दुनिया से अलविदा हो गये।

उस्ताद अहमद जान थिरकवा जी का चलन और उससे निकला हुआ रेला उस्ताद जाकिर हुसैन द्वारा प्राप्त चलन–

x	धात्र	कधे	तेटे	गेना |
2	धाती	गेना	तिना	किना |
0	तात्र	कते	तेटे	केना |
3	धाती	गेना	धिना	गिना[6] |

इसी चलन से निकला हुआ रेला–

x	धाऽतिर	किटधिर	धिरधिर	किटतक |

2	धाऽतिर	किटतक	धाऽतिर	किटतक |
0	ताऽतिर	किटथिर	थिरथिर	किटतक |
3	धाऽतिर	किटतक	धाऽतिर	किटतक |

उ0 अहमद जान थिरकवा खाँ साहब का प्रसिद्ध कायदा पं0 नयन घोष द्वारा प्राप्त

x	धिनगिनतक	तकघिड़ाऽन	धिनगिनधागे	तिरकिटधिनागिना |
2	धिनगिनधिन	गिननगतक	धिनगिनधागे	तिरकिटतिनाकिना |
0	तिनकिनतक	तककिड़ाऽन	तिनकिनतागे	तिरकिटतिनाकिना |
3	धिनगिनधिन	गिननगतक	धिनगिनधागे	तिरकिटधिनागिना[7] |

Manjhedar – Gat in Teen Taal (Ustad Ahmadjan Thirakwa)

x	Ta Kit Dha	Trak Dhit	Dhin Dha Dha	Trak Dhit |
2	Dhin Dhin Dha	Ka Dha Trak	Dhir Dhir Kit Tak	Tir Tir Kit Tak |
0	Ta Kit Ta	Trak Tit	Din Tak Ta	Trak Tit |
3	Tin Din Ta	Ka Ta Trak	Dhir Dhir Kit Tak	Tir Tir Kit Tak[8] |

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के बनखड़ा नामक गाँव में सन् 1899 में हुआ। इनके पिता अहमद बख्श खाँ अपने समय के प्रसिद्ध सारंगी वादक थे जिन्हें हैदराबाद दरबार का संरक्षण प्राप्त था। बालक अमीर हुसैन बाल्यावस्था में पिता के साथ ही रहे और उनसे तबला वादन की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। उस्ताद मुनीर खाँ इनके मामा थे। इन्होंने अपने भांजे को तालीम दी लेकिन इनके वापस लौट आने पर यह सिलसिला टूट गया। फिर उन्होंने 1914 में मुम्बई जाकर उस्ताद मुनीर खाँ जी से तालीम प्राप्त की। ये मुनीर खाँ जी के प्रमुख शिष्यों में थे। उस्ताद मुनीर खाँ अपने प्रमुख शिष्यों को अपने साथ देशाटन पर ले जाया करते थे। साथ ही तबला वादन के लिये प्रोत्साहित भी किया करते थे। इन्होंने सन् 1923 में चौबीस वर्ष की आयु में तबला वादन कर रायगढ़ के तत्कालीन नरेश जो कला पारखी भी थे राजा चक्रधर सिंह से आशीर्वाद स्वरूप बड़ी राशि प्राप्त की।

उस्ताद अमीर हुसैन खाँ साहब की कर्मभूमि मुख्य रूप से मुम्बई ही रही। खाँ साहब ने मुम्बई में रहकर वहाँ सैकड़ों शिष्यों को शिक्षा दी तथा महाराष्ट्र प्रान्त में तबले का प्रचार–प्रसार किया। वे एक अद्‌भुत कलाकार व विलक्षण प्रतिभा वाले पुरूष थे। खाँ साहब की प्रशंसा में उस्ताद हबीबुउद्दीन खाँ जी ने एक बार कोलकाता की एक महफिल में कहा था कि मेरठ ने हिन्दुस्तान को बहुत आला दर्जे के तबलिये दिये, लेकिन अमीर हुसेन जैसा बजायक, बनायक, बतायक और आदमी अभी तक पैदा नहीं किया।

खाँ साहब के मन में संगीत जगत में तबला वादन तथा वादकों का सम्मान न किये जाने का गम था। पहले शुरूआती दिनों में तो खाँ साहब संगत किया करते थे लेकिन फिर बाद में सिर्फ सोलो वादन का मंचन करने लगे।

खाँ साहब अमीर हुसेन जी एक कोमल व्यक्तित्व वाले उदारवादी व्यक्ति थे। वे सदैव लय ताल की दुनिया में मंत्र मुग्ध रहा करते थे। उन्हें शेरो–शायरी का भी शौक था। खाँ साहब जी को कुरैशी जमात का चौधरी होने का सम्मान प्राप्त था। अमीर हुसेन खाँ जी ने फर्रूखाबाद और दिल्ली घरानों में अपनी रचनाओं के द्वारा उन्हें विपुलतम बनाया। सन् 1961 में ये गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल द्वारा सम्मानित किये गये। इनके सोलो वादन का एक प्ले रिकार्ड आज भी उपलब्ध है।

हुसेन खाँ के प्रमुख शिष्यों में सर्वश्री अरविन्द मुलगाँवकर, गुलामरसूल, पद्मभूषण निखिल घोष, पंढरीनाथ नागेश्कर, धीना मुमताज, शरीफ अहमद, इकबाल हुसेन, श्रीपद नागेश्कर, बाबा साहब मिरजकर, आनंद बोडस, पान्डुरंग सोलंकी थे। इनके अतिरिक्त मुम्बई की महिला तबला वादिका डा0 आबान मिस्त्री भी इनकी शिष्या रही।

अमीर हुसेन खाँ जी का देहान्त 5 जनवरी 1969 को मुम्बई में हुआ।

मिश्र जाति का कायदा उस्ताद अमीर हुसैन खाँ प्राप्त पं0 नयन घोष

x	धागेना	धातिरकिटतक	धागेना	धिनागिना |
2	तिरकिटतक	धाधातिरकिट	धागेना	तिनाकिना |
0	ताकेना	तातिरकिटतक	तागेना	तिनाकिना |
3	तिरकिटतक	धाधातिरकिट	धागेना	धिनागिना[9] |

Qaida Rela in Ektaal

x	Dha S Kit Tak		Tir Kit Dha S Tir |	0	Kit Tak Tir Kit
	Dha Tir Kit Tak |	2	Dha Ti Dha Ge		Ti Na Ke Na |
0	Ta S Kit Tak		Tir Kit Ta S Tir |	3	Kit Tak Tir Kit
	Dha Tir Kit Tak |	4	Dha Ti Dha Ge		Dhi Na Ge Na[10] |

पं0 निखिल घोष

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के तबला वादक पद्मभूषण पं० निखिल घोष का जन्म 28 दिसम्बर, 2018 को वारिसाल नामक गाँव में (वर्तमान बांग्लादेश में स्थिति) एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। वे विख्यात बांसुरी वादक स्व० पं० पन्ना लाल घोष के छोटे भाई थे। निखिल जी का संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित था। एक शिक्षक, कलाकार अनेक पुस्तकों के लेखक, एक नवीन स्वरांकन पद्धति के निर्माता एवं मुम्बई में एक संगीत महाविद्यालय के संस्थापक आदि अनेक गुणों के धनी इस कलाकार ने शास्त्रीय संगीत की बहुत सेवा की है।

पं० निखिल घोष के पिता श्री अजय कुमार घोष एक अच्छे संगीतज्ञ थे। निखिल जी ने बचपन से ही संगीत जगत में प्रवेश किया। गायन की शिक्षा अपने पिता के अतिरिक्त सर्वश्री विपिन चटर्जी, ज्ञान प्रकाश घोष, फिरोज निजामी और तबला वादन की शिक्षा सर्वश्री ज्ञानप्रकाश घोष, अमीर हुसैन खाँ और उस्ताद अहमद जान थिरकवा से प्राप्त की।

मुंबई आने पर घोष जी ने फिल्मी दुनिया में भी अपनी किस्मत आजमाई और कई फिल्मों में संगीत भी दिया परन्तु यह क्षेत्र आपको रास नहीं आया और आपने अपने एक मित्र के नाम से 'अरूण संगीतालय' नामक एक शिक्षण संस्था स्थापित की। विलय की लोकप्रियता से काम बढ़ता गया और यही 'अरुण संगीतालय' संगीत भारती' और बाद में 'संगीत महाभारती' में रूपांतरित हो गया। इस महाविद्यालय को महाराष्ट्र शासन के शिक्षा विभाग से मान्यता भी प्राप्त है। इसके माध्यम से घोष जी ने हजारों छात्र–छात्राओं को संगीत की शिक्षा दी। आपने 'Encyclopaedia of music, Dance and Drama in India' नामक पुस्तक तैयार करने की एक बृहद योजना बनाई प्राप्त सूचना के अनुसार यह किताब प्रकाशित हो चुकी है। आपकी पुस्तक "Fundamentals of Raga & Tala with a new system of Notation" अंग्रेजी, मराठी, हिंदी, गुजराती तथा बांग्ला भाषाओं में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त कई पुस्तकें प्रकाशनाधीन भी हैं।

तबले के संगतकार के रूप में पं० घोष ने लगभग तीन पीढ़ी के कलाकारों के साथ संगत की है। एक ओर जहां पं० ओंमकार नाथ ठाकुर, उस्ताद फैयाज खां, उ0 अलाउद्दीन खाँ, उ0 बड़े गुलाम अली खाँ, अग्रज श्री पन्ना लाल घोष के साथ तो वहीं दूसरी ओर पं० रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खाँ के साथ और अपने से कम उम्र के कलाकारों में पं० निखिल बैनर्जी व

पं० जसराज आदि के साथ कई–कई बार संगत की है। सोलो–वादक के रूप में पं0 निखिल घोष ने यूरोप और अमेरिका के अनेक देशों में एवं विश्वविद्यालयों, रेडियों और दूरदर्शन के माध्यम से अपनी प्रतिभा स्थापित की।

पं० निखिल घोष के पुत्र द्वय श्री नयन घोष तबला वादक, श्री ध्रुव घोष सारंगी– वादक तथा पुत्री तूलिका सितार की कलाकार हैं। आपको जीवन में अनेक मान–सम्मान एवं उपाधियां मिलीं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि उनके सर्वोत्तम अलंकरणों में से एक है।

आपका निधन 76 वर्ष की आयु में दिनांक 3 मार्च, 1995 को मुम्बई में हुआ।

पं0 निखिल घोष जी का रेला प्राप्त पं0 नयन घोष द्वारा–

x	धाऽतिर	किटतक	तिरकिट	धिरधिर	|
2	धिरधिर	किटतक	धाऽतिर	किटतक	|
0	ताऽतिर	किटतक	तिरकिट	थिरथिर	|
3	थिरथिर	किटतक	धाऽतिर	किटतक[11]	|

निष्कर्ष

फर्रुखाबाद घराने के प्रतिष्ठित कलाकार में उस्ताद मुनीर खाँ, उस्ताद मसीत खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर हुसैन खाँ, उस्ताद करामतउल्ला खाँ, पं0 ज्ञान प्रकाश घोष के नाम प्रमुख है जिन्होंने अपनी वादन शैली के माध्यम से संगीत जगत को अत्यन्त समृद्ध कर दिया है। वर्तमान समय में फर्रुखाबाद घराने की स्थिति अच्छी है। आधुनिक समय में घरानों की परम्परा क्षीण होती जा रही है और पूर्व के उस्तादों एवं विद्वान ताबलिकों द्वारा रचित वादन सामग्री को सुरक्षित रखना बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस घराने की विशिष्ट रचनायें चाला, रौ और गत के विविध प्रकार इस घराने को अन्य घराने से अलग करते है। इसलिये ये घराना अद्वितीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मूलगाँवकर, अरविन्द, खजाना–ए–बंदिश : मुम्बई : मृणालिनि मूलगाँवकर/वल्लरी तुलजापुरकर, 2022
2. मूलगाँवकर, अरविन्द, खजाना–ए–बंदिश : मुम्बई : मृणालिनि मूलगाँवकर/वल्लरी तुलजापुरकर, 2022
3. भेंटवार्ता, पं0 नयन घोष।
4. Chishti, Dr. S.R. Compositions of the Great Tabla Maestros, New Delhi : Kanishka Publishers, 2016.
5. भेंटवार्ता, पं0 देवाशीष अधिकारी।
6. भेंटवार्ता, उ0 जाकिर हुसैन।
7. Chishti, Dr. S.R. Compositions of the Great Tabla Maestros, New Delhi : Kanishka Publishers, 2016.
8. भेंटवार्ता, पं0 नयन घोष।
9. वही
10. Chishti, Dr. S.R. Compositions of the Great Tabla Maestros, New Delhi : Kanishka Publishers, 2016.
11. भेंटवार्ता, पं0 नयन घोष।